International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST229215

छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले में रेशम उद्योग के विकास में विपणन से योगदान समस्या तथा उनका सुझाव का अध्ययन

होत्री देवी
शोधार्थी पीएचडी वाणिज्य विभाग,
कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर (छ.ग.), रायपुर (छ.ग.)

डाॅ अरविंद सक्सेना,
वाणिज्य एवं प्रबंध विभाग,
कलिंगा विश्वविद्यालय नया

Article Info
Volume 9, Issue 2
Page Number : 376-380

Publication Issue
March-April-2022

Article History
Accepted : 15 April 2022
Published : 25 April 2022

सारांश

रेशम उद्योग भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यस्थाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह छत्तीसग राज्य के कोरबा जिले में खास तौर पर प्रमुख उद्योग में से एक है। इस शोध पत्र में छत्तीसग राज्य के कोरबा जिले के संदर्भ में रेशम उद्योग के विकास में विपणन से योगदान समस्य तथा उनका सुझाव का अध्ययन किया गया हैं। सुंदर चमकीली रेशम एक प्राकृति फाइबर प्रोटीन से बना पर्यावरण अनुकूल उत्पाद होने के कारण यह संरक्षित व आरामदाय उत्पाद माना जाता है। यहां ग्रामीणों की आजीविका का मुख्य साधन रेशम उत्पादन करना जो प्राकृतिक व पालित पर आधारित हैं। लेकिन वर्तमान समय में किसी भी वस्तु का केव उत्पादन व उपयोग के लिए नहीं बल्कि उसके विक्रय का विस्तार करना भी है । बड़े सम् में उत्पादन किए जाने से विपणन का क्षेत्र देश ही नहीं बल्कि विदेशी व्यापार में भी विकसि किया जा सकता है। वर्तमान में रेशम का उत्पादन आसान है, लेकिन उनका विपणन क अधिक जटील है। अतः हमें चाहिए कि, आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रयं करके विपणन व्यवस्था को सुधारने की कोशिश की जानी चाहिए। इस शोध में छत्तीसग राज्य में रेशम उद्योग के विपणन में होने वाली समस्याओं / चुनौतियों का अध्ययन कि गया है। तथा रेशम उद्योग के विकास में आने वाली समस्याओं को कम करने हेतु सुझ दिया है।

कि वर्डः- छत्तीसगढ़ राज्य, कोरबा जिले , रेशम उद्योग, विपणन, समस्या,सुझाव ।

प्रस्तावना

किसी भी देश के विकास में विपणन तकनीकियों की अहम भूमिका होती हैं , जिसके प्रचार-प्रसार से कृषि आधारित उद्योगों को सफलता की उचाइयो पर ले जाया जा सकता है। रेशम उद्योग एक प्राचीन सांस्कृतिक ग्रामीण आधारित उद्योग हैं, जो पहले गांव तक ही सीमित था। अब ये उद्योग देश विदेश तक इसकी मांग बढ़ गई हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

रेशम का अर्थ , रेशम (सिल्क)एक सॉफ्ट फाइबर होता हैं, यह फाइबर बहुत हल्का होता है, सिल्क फाइबर का उत्पादन सिल्क वर्म से होता हैं इसलिए इसका नाम एनिमल फाइबर हैं, क्योंकि जब यह कीट है तो यह एनिमल में आयेगा।

विपणन से तात्पर्य, उन गतिविधियों से है जो एक कंपनी किसी उत्पाद या सेवा की खरीद या बिक्री को बढ़ावा देने के लिए करती है। मार्केटिंग में उपभोक्ताओं या अन्य व्यवसायों के लिए विज्ञापन, बिक्री और उत्पादों को वितरित करना शामिल है। कुछ मार्केटिंग किसी कंपनी की ओर से संबद्ध द्वारा की जाती है। निगम के विपणन और प्रचार विभागों में काम करने वाले पेशेवर विज्ञापन के माध्यम से प्रमुख संभावित दर्शकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। प्रचार कुछ दर्शकों के लिए लक्षित होते हैं और इसमें सेलिब्रिटी विज्ञापन, आकर्षक वाक्यांश या नारे, यादगार पैकेजिंग या ग्राफिक डिजाइन और समग्र मीडिया एक्सपोजर शामिल हो सकते हैं।

किसी भी देश की आर्थिक सामाजिक समृद्धि के लिए उद्योग को विकसित करना अति आवश्यक हैं। इसमें सबसे बड़ी भूमिका वस्तुओं के उपभोक्ताओं की होती हैं, इसलिए उपभोक्ताओं को बाजार का राजा कहा जाता हैं। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में पारम्परिक तसर कोकून से घागा निकालने और उसको वस्त्र बनाने तक का कार्य वर्षों से चलता आ रहा हैं। इससे व्यापारियों में तसर कोकून की मांग हमेशा से रहते आई हैं और मांग की आपूर्ति के लिए वे जिले में प्राकृतिक रूप से उत्पादित तसर कोकून पर आश्रित रहते है। इसी को देखते हुए विभाग ने प्राकृतिक वन क्षेत्रों का उपयोग एवं नए पौधों का वृक्षारोपण को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित किया है। लेकिन परिस्थितियों के अनुकूल किसानों के द्वारा तसर कोकून का गुणात्मक तकनीकियों का प्रयोग कर उत्पादन करने में भी उन्हें अपने उत्पादों को विक्रय कर उचित मूल्य प्राप्त नहीं मिल पाता है क्योंकि यहां ओपन मार्केट की सुविधा नहीं हैं, जिसके कारण यहां का उत्पादन मार खाता हैं।

साहित्य समीक्षा

- गुलजार अहमद खान, और एस नजीर अहमद साहब, 2018 - ‘‘समशीतोष्ण रेशम उत्पादन और प्रासंगिक बाधाओं में उद्यमिता के अवसर’’ वास्तविक उत्पादन और लक्ष्यों के बीच इस अंतर को पूरा करने के लिए, किसानों को अपने निवेश, जोखिम और प्रयासों पर अच्छे रिटर्न का एहसास करने के लिए खुद को घरेलू बाजार में केवल उत्पादक-विक्रेता से उत्पादक सह विक्रेता के रूप में बदलने की जरूरत है। किसानों को भी सवालों के जवाब जानने की जरूरत है जैसे कि क्या उत्पादन करना है, कब उत्पादन करना है, कितना उत्पादन करना है, कब और कहां बेचना है, किस कीमत पर और किस रूप में अपनी उपज को बेचना है। युवाओं को इस उद्योग में नए उद्यम उपलब्ध कराकर उन्हें आकर्षित करने की जरूरत है। यद्यपि 90 के दशक की शुरुआत से ही उद्योग राजनीतिक अशांति, विदेशी प्रतिस्पर्धा, कृषि भूमि के निचोड़ने, सफेदपोश नौकरियों, अनियमित विपणन आदि के कारण समस्याओं का सामना कर रहा है। इन समस्याओं के बावजूद, उद्योग अभी भी प्रयास कर रहा है। इस प्रकार वर्तमान समीक्षा पत्र में उद्यमशीलता की क्षमता, सीमित कारकों और किसानों, युवाओं, अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, राज्य विभागों की भूमिका और कश्मीर घाटी में रेशम उत्पादन को अपने पुराने गौरव के लिए विकसित करने के दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है।
- रेशमा चंदन, शाइकी 2017- वर्तमान अध्ययन ‘‘अर्थशास्त्र का रेशम उत्पादन और आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में कोकून का प्रसंस्करण‘‘ का अध्ययन शहतूत पत्ती उत्पादन और कोकून उत्पादन की लागत का अध्ययन करने, विपणन पहलुओं

और कोकून के प्रसंस्करण, रेशम उत्पादन उद्योग द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का अध्ययन करने के लिए किया गया था। कोकून का मूल्य व्यवहार।

- सुषमा शर्मा, सोनिया आचार्य 2021 - ''नेपाल के पश्चिमी भीतरी तराई क्षेत्र में रेशम उत्पादन की उत्पादन गतिविधियां और मूल्य श्रृंखला विश्लेषण अध्ययन'। नेपाल के पश्चिमी भीतरी तराई क्षेत्र में रेशम उत्पादन उत्पादों की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला का आकलन करने के उद्देश्य से नवंबर 2019 - फरवरी 2020 में आयोजित किया गया था। इस क्षेत्र में रेशम उत्पादन की शुरुआत कुछ व्यक्तिगत हितों के कारण हुई थी, लेकिन लोकप्रियता और भारी वापसी हुई और खाद्य सुरक्षा और रोजगार के स्रोत के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निकला। खोज और शोध के अनुसार, द्वि-वोल्टाइन रेशमकीट (बॉम्बिक्स मोरी) को मुख्य रूप से पाला गया था जो शहतूत के पौधे की पत्तियों पर फीड करता है किसानों के अनुसार दर्ज की गई समस्याएं रेशमकीट पालन और आधुनिक रेशमकीट पालन तकनीकों के दायरे को बढ़ाने के लिए उपयुक्त तकनीक की कमी, उचित सिंचाई सुविधाओं की कमी, और सरकारी सहायता और समर्थन की कमी थी। यह शोध विभिन्न स मस्याओं का समाधान करेगा और क्षेत्रीय रेशम उत्पादन को परिपक्व और लाभदायक बनाने पर जोर देगा।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध विषय - रेशम उद्योग के विकास में विपणन का योगदान, छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के संदर्भ में, निम्न उद्देश्य का अध्ययन किया गया हैः-

1. छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के रेशम उद्योग में विपणन के योगदान का अध्ययन।
2. छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम उद्योग के विपणन में होने वाली समस्याओं / चुनौतियों का अध्ययन।
3. रेशम उद्योग के विकास में आने वाली समस्याओं को कम करने हेतु सुझाव का अध्ययन।

छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम उद्योग विकास में विपणन के योगदान

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग हैं , अर्थव्यस्थाओं को सुदृढ करने के लिए रेशम उत्पाद उद्योग की व्यवस्था करना तथा दूसरा उसका विपणन तकनीकी को बढ़ाना क्योंकि भारतीय किसानों का कृषि स्वरूप उत्पादन आर्थिक विकास के साथ इसमें काफी बदलाव आया है। भारत में रेशम उत्पादन का विपणन अधिक महतत्वपूर्ण है क्योंकि भारत देश गांवों का स्थान है यहां 64 प्रतिशत भाग कृषि का है। ग्रामीण रेशम आधारित कार्य से अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं जो देश की सकल घरेलू उत्पादन का 20 प्रतिशत है। प्रतिस्पर्धा के युग में विपणन संबंधी क्रियाएं दोनों ही वर्तमान समय की मांग हंै ,तभी किसान उत्पादों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा सकते है आशायक्ताओं को पूरा कर सकते है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, यह जानना काफी महत्वपूर्ण है कि क्यों सरकारी योजनाओं में रेशम उत्पादन को महत्व मिल रहा है।

- रेशमकीट के खाद्य पौधे मैदानी इलाकों से शुरू होकर विभिन्न प्रकार की भूमि में उग सकते हैं न्यूनतम वर्षा वाले पहाड़ी क्षेत्रों में।

- विकासशील देशों के सामाजिक-आर्थिक ढांचे में रेशम उत्पादन को महत्व दिया गया क्योंकि इसका अन्य फसलें उगाने के दौरान किसान का खाली समय। तथा इस प्रकार, यह महिलाओं के लिए अधिक उपयुक्त है जो रेशम के कीड़ों को घर के काम के साथ-साथ घर में पाल सकते हैं।
- 'ग्रामीण विकास योजनाओं का समर्थन करता है क्योंकि यह ग्रामीण श्रमिकों को रोजगार देता है।
- ''काम करने वाले ग्रामीण जन के प्रवास को रोकता है, इस प्रकार शहरीकरण को कम करता है''

निम्नलिखित बिंदु रेशम उत्पादन के महत्व पर कुछ और प्रकाश डालते हैंः-

1. व्यक्तिगत स्तर पर /पारिवारिक स्तर पर अच्छा रिटर्न देता है।
2. कम निवेश से शुरू किया जा सकता है।
3. न्यूनतम तकनीकी कौशल के साथ अभ्यास किया जा सकता है।
4. एक एकड़ शहतूत की खेती
5. लोगों के लिए रोजगार पैदा करता है
6. एक हेक्टेयर में से शहतूत की खेती और रेशमकीट पालन से 5,000 का उत्पादन होता है
7. ''वर्ष भर में कम अंतराल पर आय प्रदान करता है।
8. ''छोटे और सीमांत कृषि जोत के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम उद्योग के विपणन में होने वाली समस्याओं / चुनौतियों

1. मध्यस्थ की अधिकता छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले में रेशम उत्पादन में लगे किसानों एवं अंतिम उपभोक्ता के बीच मध्यस्थ या बिचैलियों की एक बड़ी संख्या होती हैं इससे किसानों को जहां उपज का कम मूल्य प्राप्त होता है वहीं उपभोक्ताओं को ऊंची कीमत चुकानी पड़ती है।
2. तसर कोकून का ओपन मार्केट या खुला बाजार ना होने की वजह से इसका उत्पादन मार खाता हैं।
3. छत्तीसगढ़ राज्य में कोकून के संरक्षण तथा विक्रय के लिए केवल एक ही कोकून बैंक होने की वजह से किसानों को विक्रय करने के लिए बाजार नहीं मिल पाता है।
4. छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा रेशम के उत्पाद के विक्रय के लिए किसी भी प्रकार का विपणन चैनल्स का प्रयोग नहीं किया जाता है।
5. क्रेताओं द्वारा तसर कोकून का क्रय थोक मूल्य के आधार पर किया जाता है। जिसकी वजह से किसानों को उचित मूल्य नहीं प्राप्त हो पाता ,क्योंकि सरकार ने रेशम उत्पादों को उनके गुणवत्ता के आधार पर जो वर्गीकृत किया है, उसके लिए कोई उचित निम्न तथा उच्च राशियों का निर्धारण नहीं किया है।
6. गांव में बिक्री किसान कुल उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा गांव के महाजन तथा व्यापारियों को बेच देते हैं। अधिकांश किसान महाजनों के ऋण से दबे होते हैं। तथा इस बात के लिए जोर डालते हैं कि फसल उन्हें बेच दे। वह किसान को फसल का उचित मूल्य भी नहीं देते।

रेशम उद्योग के विकास में विपणन सम्बन्धी आने वाली बाधाओं को दूर करने के सुझाव

1. छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में रेशम उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से बुनियाद मशीन, लगभग 400 किसानों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के आधार पर उपलब्ध कराया गया हैं। जिससे उत्पादन बहुत बढ़ गया है ताकि उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त हो सके उसके लिए ओपन मार्केट की व्यवस्था करना अति आवश्यक हैं।
2. किसानों द्वारा जो रेशम उत्पाद निर्माण किया जा रहा हैं, उसका और अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए उत्पाद ब्रांड तैयार कर उसे प्रतिस्पर्धा एवं मांग के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए ताकि सही मूल्य प्राप्त किया जा सकें है।
3. कोकून के संरक्षण तथा विक्रय के लिए जो केवल एक ही कोकून बैंक है, उनकी संख्याओं को बढ़ाया जाना चाहिए।
4. रेशम के विक्रय के लिए सहकारी विपणन व्यवस्था को लागू किया जाए, तो इससे कृषकों को रेशम उत्पाद का सही मूल्य प्राप्त हो पाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- भुवन कुमार गुप्ता 2012- भारत में रेशम उद्योगः आय और रोजगार के लिए एक बढ़ता हुआ क्षेत्र अनुसंधानिका 4 (2), 61, 2012
- शर्मा, एस., आचार्य, एस., रेग्मी, एस., पौडेल, ए., और अधिकारी, जी. (2021)। उत्पादन गतिविधियाँ और नेपाल के पश्चिमी भीतरी तराई क्षेत्र में रेशम उत्पादन का मूल्य श्रृंखला विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड मैनेजमेंट, 8(2), 362-371।
- लक्ष्मणन, एस. (1995), एडॉप्शन ऑफ टेक्नोलॉजिकल इनोवेशन एंड प्रोडक्टिविटी बिहेवियर ऑफ सेरीकल्चर तमिलनाडु मेंः एक अर्थमितीय विश्लेषण, अप्रकाशित पीएचडी थीसिस मैसूर विश्वविद्यालय को प्रस्तुत, मैसूर (कर्नाटक)।
- लक्ष्मणन, एस., बी. मल्लिकार्जुन., एच. जयराम., आर. गणपति राव., एमआर सुब्रमण्यम., आर.जी. गीता देवी. तथा आर.के. दत्ता.आर.के. (1996), ''तमिलनाडु में शहतूत कोकून के उत्पादन के आर्थिक मुद्दे - एक सूक्ष्म'' इकोनॉमिक स्टडी'', इंडियन जर्नल ऑफ सेरीकल्चर, 35(2), पीपीः 128-131।
- लक्ष्मणन. एस., बी मल्लिकार्जुन. और आर जी गीता देवी. (1998) ''शहतूत रेशम उत्पादन के पैमाने का अर्थशास्त्र''इन तमिलनाडु- एन एनालिसिस'', इंडियन जर्नल ऑफ सेरीकल्चर, 36(2), पीपीः 133-137।